उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'

जन्म : 16 जुलाई 1917 ई०।

जन्म-स्थान : बक्सीटोल, हरिपुर, मधुबनी।

मृत्यु : 3 मई, 2002 ई० ।

कृति : **'कुमार'**, **'दू-पत्र'** (उपन्यास), **'संन्यासी'**, **'पतन'** (खंडकाव्य), **'प्रतीक'** (कविता संग्रह), **'विडम्बना'**, **'भजना भजले'** (कथा संग्रह), **'विदेश भ्रमण'** (यात्रा साहित्य)।

अनूदित ग्रंथः 'श्रीमद्भगवद्गीता', 'रूबाइयात-ए-उमर-खैयाम (पद्य), 'बाभनक बेटी', विप्रदास (शरच्चन्द्रक उपन्यास) आदि ।

पुरस्कार : **'दू-पत्र'** (उपन्यास) पर 1969 ई० मे साहित्य अकादमी पुरस्कार ।

साहित्य अकादमी द्वारा अनुवाद पुरस्कार प्राप्त।

व्यवसायसँ अभियंता होइतहुँ मैथिली साहित्यक प्रति व्यासजीक अनुराग एवं विभिन्न विधामे सृजित उच्च कोटिक रचनाक बल पर हिनका बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कहल जाय तँ कोनो अतिशयोक्ति नहि । ओना आलोचक लोकनि हिनक काव्य-चातुर्यकेँ बेसी प्रबल मानैत छथि । अपन काव्यमे ई अंग्रेजीक 'सॉनेट' ओ 'ब्लैँकभर्स'क सेहो प्रयोग कयलनि । मुदा गद्य, विशेषतः कथा-लेखनमे सेहो हिनका पूर्ण दक्षता छनि । भाषा संस्कृतनिष्ठ होइत छनि ।

पाठ-संदर्भ : प्रस्तुत कथा 'भजना भजले' सँ संगृहीत अछि तथा साम्प्रदायिक सद्भावपर केन्द्रित अछि। ई कथा संदेश दैत अछि जे ककरोपर कोनो रूपेँ कयल गेल उपकार व्यर्थ नहि जाइछ। दोसर शब्दमे एहिमे कृतज्ञताक चरमोत्कर्ष परिलक्षित होइछ । दोसर दिस इहो स्पष्ट होइछ जे उग्र साम्प्रदायिक भावना एक एहन उन्माद होइछ जाहिमे लोक विवेकशून्य भऽ जाइत छथि ।

शैदा आओर हमीदा

शैदा आओर हमीदा– नामेसँ बूझि सकैत छी, छलीह यवनी, संगहि नवनीत कोमलांगी सेहो। असल पाठानवंशीय पश्चिमोत्तर प्रदेशक। ओना बंग-ललना सन 'रुचिर-चिकुर-कलापा' अथवा मैथिल कन्या सन 'मृग-शावनिभेक्षणा' नहिओ भऽ सौन्दर्य ओ सुकमारताक उत्तमोत्तम कोटिमे एहि दुनू सहोदराकेँ रखबामे ककरो संकोच नहि होयतनि। अपना सभमे कहबी छैक– सीकी मारू कि बन्न दऽ शोणित फेकि देत– से यदि कतहु चरितार्थ होयबाक संभावना तँ एतहि। प्रायः 'पंडितराज'केँ एहने कोनो लावण्यमयी दृष्टिगोचर भऽ हुनक अन्तस्तलकेँ उद्वेलित कऽ देने छलथिन– आ जिनका पाबि ओ 'अवनीतलमेव साधु मन्ये'– पृथिविए पर स्वर्गसुखक भोगक कल्पना कयने छलाह।

पंडितराज जगन्नाथक समयमे आ आइ-काल्हिक समयमे कतेक भेद से एहीसँ बुझू जे पांडित्यपूर्ण विवेक अछैत ओ अपनाकेँ सम्हारि नहि सकलाह, आ एतय हमरा सभक 'चण्डाल चौखड़ी'मे सँ केओ 'मजनू' नहि बनल। डेरामे चारि गोट युवक, विद्वान केओ नहि, समवयस्के सन आ केओ गदह-पचीसी नहि पार कयने छलहुँ। विवाहित छलाह एके गोटे, परन्तु बुझबामे आयल जे हुनक पत्नी तेहेन सुन्नरि नहि छलथिन। ओना हुनका अपनो केओ गन्धर्वक 'गणो'क सङ्ग तुलना करितनि कि नहि ताहिमे सन्देह, तथापि पुरुष जातिक एहि तरहक स्वैच्छिक अधिकार बहुत दिनसँ चल अबैत छैक........। एहन जमातिक अव्यवहिते दोसर डेरामे ई तरुणी-द्वय निवास करैत छलीह-बीचमे एक दस इन्चक देवाल मात्र-जेना साधारण सरकारी डेरा सभमे रहैत छैक। हिनका संभक अभिभावक छलथिन 'शेख' साहेब, मिलिटरी आफिसमे 'स्टोरकीपर' (भंडार-पाल)। अपने बेचारे विधुर। भाय-भाउजिक देहावसानक बाद अपन दुनू भतीजीक भरण-पोषण यैह करैत छथीन। जतय जाइत छथि, नेने जाइत छथीन। आकृतिसँ नीक 'खानदान'क सन क्रम; एतय अयना आठ मास भेलनि अछि।

हमरो लोकनिक डेरामे सभसँ प्रतिष्ठित अर्थात् विवाहित व्यक्ति दासजी चारि माससँ एहि डेरामे रहैत छलाह, दोसर गोटाक अयना एक मास भेल छलनि आ' हम दू गोटे आयल छलहुँ यैह दस बारह दिन पहिने। दासजी कहलनि-'ई दुनू गोटे तँ पहिने 'बुरका' पहिरैत छलि, आब (ई बात हम अपनो आँखिएँ देखल) त साइकिलो पर चढ़ैत अछि।' हुनका शब्देँ ई सभ बेस 'फर्जण्ट' अछि।

ओ सभ कते बातमे 'अति' करय लागलि अछि, से सत्ये। असलमे ओकरा की दोष दिऔक, दोष तँ सौन्दर्यक आतिशय्य ओ उन्मद अवस्थाक अल्लढ़पनक; संगहि एतेक दिनसँ पर्दा कि बुर्का तरमे दाबल मन आब छान तोड़ल माल जकाँ दौड़य, सीमाक अतिक्रमण करय तँ आश्चर्य कोन?

हमरा दस-पन्द्रह दिनक बाद बुझबामे आयल जे हिनका सभक नाम छनि– छोटिक शैदा आ जेठिक हमीदा। अपना सभमे हम सभ गप्प करी 'बड़की' आ 'छोटकी' क संज्ञासँ। बड़कीक अवस्था अठारह-उनैस, छोटकीक सोलह-सत्रह। हमरा सभक जमातिक नाम ओ सभ जनैत छलि-पंडितजी, दासजी, सिन्हा साहेब आ' बंगाली बाबू। हिनका हम सभ कहै छलियनि 'आशू बाबू'– परन्तु बंगाली ई छलाह तेँ ओहो नामकरण बेजाय नहि।

हम दिनमे डेरामें कम्मे काल रहैत छलहुँ; नओ बजेसँ डेढ़ बजे तक, आ अढ़ाइ बजेसँ छओ बजे तक आफिसेक 'कल्हु पेरैत'। दासजी आ सिन्हा साहेब अपन नोकरी बँचबैत बेसीकाल डेरेकेँ ओगरने रहैत छलाह। आशू बाबू बेचारे बिच-बिचबाक। दास जी सभसँ बेसी रसिक लोक– भरि दिनक 'रिपोर्ट' हमरा सभकेँ संध्या काल देथि-एना हँसलि, एना बाहरमे बैसलि तकैत छलि, सुतलि छलि, फल्लाँ गीत गौलक, नोकरबा सङ्गे एम्हर ताकि फुसुर-फुसुर कयलक, साइकिल पर एतेक काल चढ़लि, एतेक बजे घूमिकऽ आयलि इत्यादि इत्यादि।

हिनका बात पर पहिने तेना विश्वास नहि होइत छल। एक छुट्टीक दिन खा' पीबि कऽ दुपहरिआमे हम ओ आशू बाबू कोनो गीत गुनगुनाइत छलहुँ– कोनो सिनेमेक गीत......। देबालक ओहि भागसँ अनुकरण आरंभ भेल। कने काल चुप रहलहुँ। दोसर गीत उठाओल । फेर वैह बात बुझबामे

आयल, मानय वाली नहि। तखन दुनू गोटे विचारि आरंभ कयल एक बङला गीत– आ अपना इच्छे– कने ऊँचे स्वरसँ। तकरा बाद तीन-चारि टा आओर बङला गीत गाओल, आब कथी ले होयतनि, बुझथु। हराओल तऽ! ई क्रम कैक दिन चलल। हिन्दीक गीत आरंभ कऽ बङला पर 'स्विच-ओन' भऽ जाय। परन्तु सर्वाधिक आश्चर्य भेल जखन सातम दिन ओमहरसँ बङलो गीतक अनुकरण भेल से कने नीके सुरमे। गुम्म भऽ गेलहुँ। ओमहरसँ हँसीक फुहारा छूटल– नीक जकाँ बुझबामे आयल– ई विजयोल्लास।

....एक दिन संध्या काल भानस करैत छलहुँ, ई हमरे कपारमे लिखल छल। नोकर अधहन किछु कम देने छलैक, देखल भातमे पानि कम, नोकरकेँ कहलिऐ– रौ सोमना, भात तँ जरि गेलौक, पानि कम देने छलही? सोमना चुप्पे रहल। उत्तर आयल देबालक ओहि पारसँ– अरे जल गया तो थोड़ा पानी डाल दो' सङहि कने हँसी सेहो। मन एहि अयाचित परामर्श पर अवश्ये प्रफुल्लित नहि भेल... किछु विरक्तिए सन। परन्तु ओकरे सन रही तखन ने....।

उच्छृंखल औद्धत्यक सीमा पहुँचल एक संध्या काल। हमर बदलीक पत्र आबि गेल छल। अपन चारि-पाँच मित्रकेँ रात्रि-भोजनक हेतु निर्मंत्रित कयने छलियनि, संगहि प्रोग्राम छल पहिने किछु संगीत चर्चा-जाहिमे एक बंगाली मित्र विमल बाबू सितार-वादन आरंभ कयलनि। तिलक कामोदक केहेन मधुर गति बढ़ल जाइत छलैक, कि किछु झ्न-झ्न-झन्। ध्यान नहि देल ओहि दिस। क्रमहि ओ शब्द बढ़य लागल, टीन पीटब आरंभ। क्रोध अत्यधिक भेल। एक दू बेर बजबो कयलहुँ– ई केहेन अशिष्टता– परन्तु फल बहुत बेशी नहि भेल। विमल बाबूक 'मूड' गड़बड़ा गेलनि। एहि भगिनी-द्वयक सौन्दर्य-सुरभि तँ बहुत दूर तक पसरल छलनि, लोक सभ आइ हिनकर आंतरिक गुणसँ अवगत भेल। सुनल छल– कहबी– **काबुलमे की गदहा नहि होइत छैक।** बुझि पड़ैछ काबुलक लग-पासमे बेशी गदहेकेँ बुद्धि होइत छैक। शेख साहेब अपने कार्यवशात् दू दिन लऽ कतहु अन्यत्र गेल छलाह। जखन अयलाह तँ हमरा कने शान्तेँ रूपेँ हुनका एहि वस्तुक उपराग देबय पड़ल। ओ क्षमा मङबे कयलनि, ओकर किछु फलो भेल। आब गीतोक अनुकरण सुनबामे नहि आबय।

परसू हम राँची छोड़ब। डेराक आन व्यक्ति सभ भोजनोपरान्त 'सेकेण्ड शो' सिनेमा गेल छलाह। अङनामे खाट पर पड़ल छलहुँ। निद्रा भऽ गेल छल। केओ पाछू दिसक केवाड़ फोलि रहल अछि। के थीक ? केवाड़ खोलल। अस्तव्यस्त भेलि जेठकी बहिन–"पंडत जी, शेख साहेब शैदा को पीट रहे हैं, बचाइए, वे उसे मार डालेंगे।"– ई कहि अपने पड़ाइलि। तावत कानब आ एक आध चीत्कार सेहो सुनबामे आयल। अङ्गनहि-सँ सोर कयलियनि, "शेख साहेब, शेख साहेब!" – स्तब्ध सन। कोनो उत्तर नहि। फेर प्रहार आ क्रन्दन ओ चीत्कार। बाहर अयलहुँ आ हुनक बन्द केवाड़कें जोरसँ ढकढकौलहुँ– "शेख साहेब, शेख साहेब, क्या कर रहे हैं? खोलिये खोलिये, मैं हूँ—।" अन्ततः केवाड़ खूजल। शेख साहेब क्रोधे लाल। मुहसँ सुराक सुवास सेहो कने कने बुझबामे आयल। लग आबि कने काल चुप रहलाह, तखन कहलनि-"क्या कहें पंडितजी, ये सब ऐसी बदमाश हो गयी है, हजार बार कहा तुम इस कम्बख्त नौकर के साथ नहीं निकलो, बाहर जाना है तो मेरे साथ चलो— पर मानती नहीं। देखिए अभी इसके साथ सिनेमा से आयी है—जरूर पहले भी जाती थी—पर—ये सब क्या है? यह अब नासमझ बच्ची है? आखिर मेरी नाक कटा कर रहेगी एक दिन। और ये साला हरामजादा कम्बख्त भाग गया। आये तो मैं उसे ठीक करता हूँ—।" किछु कालक बाद ओ शान्त भेलाह, राति तकरा बाद शान्तिपूर्वक बीतल।

राँची छोड़ल। छओ मासक बाद हमर विवाह भेल। दास जी अपने तँ नहि आबि सकलनि परन्तु एक ललितगर पत्रक सङ्गे पार्सलसँ दू गोट बढ़िया रूमाल पठौलनि, ताहिमे दुनू बहिनिक अपन हाथक काढ़ल फूलमे मुबारकवाद संग अपन नाम सेहो अंकित छलैक। दासजीक विशद वर्णन-कोना ओ सभ विवाहक विषयमे बुझलक, हुनका रूमाल देलकनि, आ अन्तमे हुनक ईर्ष्यालु आक्षेप तेहेन उपेक्षणीय नहि जे– एतेक दूरो जा कऽ हम बाजी मारि लेल आ ओ सभ ओहिठाम– ओतेक लगमे ओहिनाक ओहिना रहलाह।

□ □ □

1946क आदिमे गेलहुँ पश्चिम–पंजाब दिस, अन्ततः लाहौर। एमहर नोकरी छूटि गेल छल। कोनो व्यवसाय, अध्ययन, बेशी अध्यापन किछु काल स्कूलमे, तखन ट्यूशनोमे समय बीतल गेल। भारतक स्वतंत्रताक समय जँ जँ लग आयल गेल ओम्हुरका वातावरण विकृत होअऽ लागल। एक तँ लोक अपनहिँ फूजल ऊक, दोसर लीडर सभहिक उत्तेजनापूर्ण भाषण एवं आन्तरिक कार्यान्वयनक आदेश । हिन्दू सभहिक विरुद्ध बड़का कुचक्र चलि रहल छल। ई बात सभकेँ बूझल छलैक। हमहूँ सभ पूर्ण रूपेँ संग-बद्ध आ ओहेन अवसरो पर निर्भीक सन रही।

एक दिन एक गलीसँ पार होइत छलहुँ, सूर्यास्त भऽ गेल छलैक। पाछाँसँ एक कम्मल माथ मुँह पर फेँकि देलक। जावत बूझी तावत मुँह बान्हि देने छल– दू-तीन गोटे उठौने चल जाइत छल। सोचल– खतम भेलहुँ, निर्ममक हाथ पड़लहुँ। दुख एतबे जे अपने किछु कऽ नहि सकलहुँ आ हमरा दऽ केओ बुझिओ ने सकत। भगवान मन पड़लाह । कतेक की आकाश-पाताल सुझल– भगवान, भगवान–। एक कोठलीमे राखि ताला बन्द कऽ ओ सभ चल गेल। जयबाकाल अपनामे पंजाबीमे बाजल– एकरासँ पता लगयबाक चाही- दस बजे रातिमे आयब तखन। चारू भाग देखल– बहरयबाक उपाय नहि। एक बन्द खिड़की कि केवाड़क छिद्र द्वारा प्रकाशक एक क्षीण रेखा मात्र आबि रहल छलैक। खिड़की केबाड़ नीक जकाँ बन्द।–

अकस्मात् घरमे बिजलीक इजोत। बुझलहुँ, आबि गेल! मने मन फेर भगवानकेँ गोहराबय लगलहुँ। देखल खिड़की खोलि एक स्त्रीगण ठाढ़ि। सलवार कमीज पहिरने। मुँह बान्हल छल, हाथ सेहो। ओमहर मुँह घुराओल– ओ हमरा दिस विशेष दृष्टिएँ देखि रहल छलि। कने कालक बाद इशारासँ अपना लग बजौलक। मन्त्रमुग्ध जेकाँ लग गेलहुँ। बाजि उठलि–"पंडतजी!" हम स्तब्ध! हमरा कोना चिन्हलक । के ई ? केओ देवी कि मानुषी! स्पष्ट उर्दूमे बाजलि–(मैथिली रूप देल जाइछ)– "हमरा नहि चीन्हल? हम छी शैदा!" हाथ बढ़ा मुह खोलैत–"राँची डेरामे अहाँक पड़ोसी! अहाँ एतय कोना? ऐ–अल्ला? कोना फँसलहुँ एकरा सभहिक हाथमे। ऐ खुदा"। ओ घर चल गेलि।

एकटा बड़का कैँची हाथमे नेने आयलि– पाछाँ घुरऽ कहलक। हाथक डोरी तँ कटबे कयलक, माथक उपरोमे किछु छप। ई की ? ओ बाजलि– "हम सभ दिन अहाँकेँ तंगे करैत रहलहुँ किने, आइ सभसँ बड़का अपराध–ब्राह्मण पण्डितक टीक काटि देल। परन्तु अपन टीक अपने उठाउ, जेबीमे राखि लियऽ"– ओ मन्द–मन्द हँसय लागलि।

कहिलऐक–"जखन मरबेक अछि,तँ शिखा–सूत्र, ब्राह्मणक अपन चेन्ह नेनहि मरितहुँ– ई तँ बड़ अधलाह कयल।" ओ कने आओर हँसलि–परन्तु देखलिऐक आँखिमे नोर। बाजलि– "देखै छी, केहेन लोकक हाथमे आबि पड़लहुँ ? ई सभ राति राति भरि यैह कुचक्र रचैत रहैए। परसू कि चारिम दिनसँ एतऽ अनर्थ होइतैक– प्राय: केओ हिन्दू नहि बाँचत—। अहाँ हमरा शेख साहेबक हाथसँ बचौने छी, धन्य खुदा जे अहाँकेँ अन्तऽ नहि लऽ जा कऽ एतहि अनलक। हम एम्हुरका केबाड़ खोलि दै छी। अहाँ चुपचाप निकसि जाउ।"

हम जेना स्वप्न लोकमे रही। चुप्पे रहलहुँ– किंकर्त्तव्यविमूढ़–प्राय । केबाड़ खोलि फेरि घरमे आयलि संगहि थोड़ेक छहौड़ा, किसमिश आ अखरौट सेहो देलक आ छोटछीन एकटा टीनक तखती जाहिमे अर्द्धचन्द्र आ ताराक संग किछु संकेत अंकित छलैक। कहलक "ई तखती 'लीग' क देल प्रतीक थिकैक। कतहु पकड़ाय लागी तँ देखा देबै' केओ सन्देहो ने करत । परन्तु अहाँ अझुके राति, बरू एखने शहर छोड़ि चल जाउ। देरी नहि—।"

हमरा आब किछु स्फूर्ति भेल। 'यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि'क सिद्धान्त स्मरण भेल। परन्तु हमर आँखिसँ स्वत: कृतज्ञताक नोर खसय लागल। मन भेल एहि देवीक पायर पर खसी। ओ अपन दोपटासँ आँखिक नोर पोछलक, कहलक–"अहाँ तँ तेहेन लोक नहि! भगवानक भक्त, खुदाक वन्दा– ओकरा कहूँ अधलाह होइ– जाउ। ओ सभ—बंगाली बाबू, सिन्हा साहेब–आ दास जी सभक कोनो पता अछि?" हम कहलिऐक–"नहि। अहाँक बहिन कतऽ छथि?" "ओकर विआह भेलै लखनउमे। वेश बढ़िञा जकाँ अछि, एकटा बेटा आ एकटा बेटी भेलैक अछि। अच्छा आब अहाँ जाउ, एको मिनट देरी नहि।" दुनू हाथ उठा नमस्कार करैत विदा भेलहुँ तँ

कहलक-'हे एकरा 'दोआ' दैत जइयौ-'निम्मी' नाम रखलिऐए।'' एक कात चौकी पर पड़लि छोट छीन सुन्दर सुकमारि बालिका। फेर कहलक-''आइ राति दस बजेसँ पहिनहि चल जायब। खुदा हाफिज! या परवर दिगार, या खुदा।'' हमहुँ किछु गुन-गुनाइत कहलिऐक- ओकरा आन्तरिक धन्यवाद आ आशीर्वाद देलिऐक ।

बाँचि गेलहुँ अवश्ये, नहि तँ ई खिस्सा के कहैत? परन्तु पाछाँ पाकिस्तानमे जे नरमेध भेल से तँ सभकेँ बुझले अछि। एकटा अवश्य ओहि दिनसँ धारणा बदलल जे कोनो जातिमे सभ अधलाहे नहि होइछ! आश्चर्य यैह लगैछ, शैदा सन लोक जाहि जातिमे- कोना ओकर साँय, भाय, भातिज एहन नृशंसता कऽ सकल। शैदा तँ कोनो देवीक संगे तुलना पाबि सकैछ।

●

शब्दार्थ : रुचिर = सुन्दर; चिकुर = केस; मृग = हरिण; अवनि = पृथ्वी; अकस्मात = एकाएक; नरमेध = एक प्रकारक प्राचीन यज्ञ जाहिमे मनुष्यक मांसक आहुति देल जाइत छल ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. पंडितराज जगन्नाथ आ आइ-काल्हिक समयमे कोन भेद अछि?
2. मित्र लोकनिक संग संगीत-चर्चाक अन्तरालमे दुनू बहिनक प्रत्युत्तर वा कयल जायवला उपद्रवकेँ बालसुलभ मानल जाय अथवा हुनक वयसानुकूल उद्धत स्वभावक परिचायक ? लेखक किएक उपराग देलथिन ?
3. शेख साहेब कोन काज करैत छलाह?
4. शेख साहेब छोटकीकेँ किएक पिटलनि ?
5. गलीसँ पार होइत काल लेखकक संग की घटना घटल ?
6. कैंची आनि शैदा की कयलक ?
7. शैदाक बेटीक नाम की छलैक ? लेखक सँ ओकरा आशीर्वाद देबय लेल किएक कहलक ?

गतिविधिः

1. अर्थ लिखू-शिखा, मानुषी, नासमझ, नृशंसता।
2. एहि कथाक आधार पर तत्कालीन लाहौरक विकृत साम्प्रदायिक स्थितिक वर्णन करू ।
3. शेख साहेबक चारित्रिक दुर्बलताक वर्णन करू।
4. कथाक आधार पर शैदाक चरित्र-चित्रण करू ।
5. कथा मे प्रयुक्त निम्नलिखित शब्दक सन्धि विच्छेद करू :
   कोमलांगी, उत्तमोत्तम, स्वैच्छिक, देहावसान, विजयोल्लास, भोजनोपरान्त।
6. निम्नलिखित शब्दकेँ भाववाचक संज्ञामे रूपान्तरित करू :
   हिन्दू, जाति, स्त्री, पंडित, विद्वान, तरुण एवं उच्छृंखल ।

निर्देश :

(क) 'अवनीतलमेव साधु मन्ये' क भाव शिक्षक छात्रकेँ बुझाबथि।

(ख) एहि कथामे प्रयुक्त उर्दू शब्द सभसँ शिक्षक छात्रकेँ परिचित कराबथि।

(ग) व्यापक राष्ट्रीयता ओ संकुचित राष्ट्रीयताक अन्तरसँ छात्रकेँ अवगत कराबथि ।

(घ) शिक्षकसँ अपेक्षा जे ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यमे तत्कालीन भारतक सामाजिक ओ राजनीतिक पृष्ठभूमिक समीक्षा छात्र लोकनिक समक्ष करथि ।

□